# लौह पुरूष आज भी प्रासंगिक

**डॉ० मीनाक्षी व्यास**
*प्रोफेसर*
*समाजशास्त्र विभाग*
*एस०एन० सेन महाविद्यालय, कानपुर*
*ईमेलः*

Reference to this paper should be made as follows:

**डॉ० मीनाक्षी व्यास**

*लौह पुरूष आज भी प्रासंगिक*

*RJPP Dec.22,*
*Vol. XX, Special Issue*

*pp.86-90*
*Article No. 14*

***Online available at*** *:*
https://anubooks.com/journal/rjpp

***DOI:***
*http://doi.org/10.31995/rjpp.2022v20iS.14*

**"कमजोर होते हैं वह लोग जो शिकवा किया करते हैं । उगने वाले जो पत्थर का सीना चीर कर भी उगा करते है।"**

राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का भाव भारतीय संस्कृति के मूल में ही निहित है, इसके लिए पूर्वजों ने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया इसी भाव के कारण भारत शस्त्रुओं के सम्मुख गर्व से सिर ऊंचा करके खड़ा है। लगातार चोंटे होती रही, किन्तु हमारे वीर आगे ही बढ़ते चले गए। भारतीयता जानने से पहले यह जानना जरूरी है कि भारत क्या है? भारत पुर में नागालैंड से लेकर पश्चिम में गुजरात तक और उत्तर मे कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। यहां जो रहता है वह भारतीय हैं। यहां हिंदू मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी, और भी अन्य अन्य धार्मिक विश्वासों वाले लोग रहते हैं अलग–अलग प्रांतो में रहने वाले भारतीयो की अलग–अलग भाषाएं भी है, खान–पान अलग है पहनावा अलग है संगीत अलग है परपराएं अलग है अर्थात कहीं कोई एकरूपता नहीं कोई समानता नहीं इसीलिए भारत वासियों की पहचान अनेकता, विभिन्नता, विविधिता है। प्रत्येक भारतीय के मन में भारतीयता के प्रति विश्वास, सम्मान और आदर का भाव होना ही भारतीयकरण है। भारत को हिन्दुस्तान, इंडिया, भारतवर्ष जैसे अनेक नामों से जाना जाता है। आदिकाल से उत्तर पश्चिम में बहने वाली महानदी सिंधु के नाम से जानते थे। जैसे ही रानियों ने हिन्दू और यूनानी शब्दों से मिलाकर इंडस कहा हिमालया तमा रब्बा यावत इंदू सरोवर तम देव निर्मित देश हिन्दुस्तान रक्षक सत्य, अर्थात हिमालय में प्रारंभ होकर इंदू सरोवर हिंद महासागर तक देव निर्मित देश हिन्दुस्तान कहलाता है। इसको ऐसा बनाने में मां भारती के लाल लौहपुरूष बल्लभ भाई पटेल का वाक्य,"एक भारत श्रेष्ठ भारत"– एकता के बिना जन शक्ति, शक्ति नहीं है। बहुत ही प्रेरणादायक, मार्गदर्शक है। राष्ट्रीय एकता का तात्पर्य राष्ट्र के सभी घटकों में भिन्न–भिन्न विचारों, आस्थाओं, मतों के बावजूद आपसी प्रेम और भाईचारा स्थापित रहे, इसके लिए शारीरिक रूप से निकटता की आवश्यकता नहीं, बल्कि लोगों में मानसिक, बौद्धिक, वैचारिक भावात्मक निकटता, समानता की आवश्यकता है। भारत विविध धर्मों, संस्कृतियों का देश है भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक एवं क्रियात्मक रूप में एक नई दिशा देने के कारण सरदार पटेल राजनीतिक इतिहास में एक गौरवपूर्ण स्थान पर आज भी स्थापित है। वास्तव में वह आधुनिक भारत के शिल्पी थे। उनके कठोर व्यक्तित्व में बिस्मार्क जैसी संगठन कुशलता, कौटिल्य जैसी राजनीतिक सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अब्राहम लिंकन जैसी अटूट निष्ठा थी। इस अदम्य उत्साह, असीम शक्ति से उन्होंने नवजात गणराज्य की प्रारंभिक कठिनाइयों का समाधान किया। उसी के कारण विश्व के राजनीतिक मानचित्र में उन्होंने अपना अमिट स्थान बना लिया। त्याग, अनवरत सेवा, अनुशासन प्रियाता और कर्मठ व्यक्तित्व के कारण उनका जीवन सदैव प्रकाश स्तंभ की तरह अमर ज्योति के रूप में देदीप्यमान रहेगा। पिता झवेरभाई धर्म परायण व्यक्तियों। गुजरात में सन 1828 में स्वामी सहनानंद द्वारा स्थापित स्वामीनरायण पंथ के वे परम भक्त थे। वल्लभ भाई पटेल ने स्वयं का है, "मैं साधारण कुटुंब का था। मेरे पिता मन्दिर में ही जिंदगी बिताते थे और उन्होंने वहीं पूरी भी की" शा 1949 में "शकर विकली" के बच्चों के विशेषांक में एक संदेश में वल्लभ भाई पटेल ने अपने बचपन के बारे में कहा, "जहां तक मुझे ध्यान है मैं शरारत में या छुप कर दुसरों को मूर्ख बनाने में पीछे नहीं रहता था। जहां मुझे स्मरण है, मैं यह

कार्य अच्छे उददेश्य हेतु करता था। मैं अध्ययन में उतना ही गंभीर था जितना कि खेलों में प्रसन्नचित्त, मुझे लापरवाह शिक्षकों से कोई सहानुभूति नही थी, उनको मैं ना छोड़ता था" ।

सरदार बल्लभ भाई पटेल आज भी उतने ही प्रासांगिक और महत्वपूर्ण हैं, जितने आजादी के समय में थे। जब राष्ट्रीय एकता की बात आती है। तो सबसे पहले पटेल जी का की नाम निकलता है सरदार पटेल ने अपने जीवन के उदाहरण से इसे प्रस्तुत किया। अग्रेजों ने जब भारत को मुक्त कर यहां पर जाने का फैसला किया उस समय की रियासतो को यह स्वतंत्रता दे दी गयी थी कि वे चाहे तो पाकिस्तान में या भारत में शामिल हो सकते है। उस समय ऐसे व्यक्त की आवश्यकता थी देश हित में दृढ़ संकल्प के साथ काम करें उस समय किसी भी की परवाह न करते हुए सरदार पटेल ने देश को एक करने के लिए दृढ़ निश्चय किया। सरदार पटेल को यह विश्वास होने लगा कि यदि विभाजन किया गया भारत एक नहीं बल्कि अनेक टुकड़ो में बट सकता है। "इसलिए राष्ट्रीय एकता की बात होते ही उस दृढ़ निश्चय वाले विराट व्यकित्तव धनी सरदार पटेल स्मरण में आते है। उन्होने साम, दाम दण्ड, भेद नीति का प्रयोग करते हुए सभी सहयोग लिया किन्तु आज हमारे पास बहुत सारे साधन उपलब्ध है तब भी कई मोर्चो पर हमसफल नहीं हो पाते जबकि उस समय के हालात की कल्पना करना भी मुश्किल है इसलिए इन्हें लोग लौह पुरूष अर्थात फौलादी इरादों वाला व्यक्ति कहते है। इनकी प्रतिमा स्टेच्यू आफ यूनिटी जो सबसे बड़ी प्रतिमा के रूप मे स्थापित की गयी। यह गुजरात में नर्मदा के सरदार सरोवर बांध के सामने 182 मी. उचीं धातु से निर्मित प्रतिमा है जिसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सरदार पटेल की 137वी. जयन्ती के अवसर पर इसको राष्ट्र के नाम समर्पित किया।

सरदार पटेल गृह मंत्री के रूप में गृहमंत्रालय का काम बड़ी योग्यता दक्षता तथा परिश्रम से किया साथ ही उन्होंने भारत के संविधान और एकीकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया वे तपे हुए कनक विशुद्ध है।" लोगों ने अपनी तरफ लोहे का दान दिया इन्होंने अपने व्यक्तित्व से असंभव से सम्भव बना दिया। लार्ड माउंटबेटन ने एक स्थान पर लिखा है कि "क्योंकि सरदार पटेल नेहरू के साथ है इसलिए नेहरू सफल होगें।"

लुई फिशर ने सरदार पटेल के लिए कहा था कि "गांधी एवं जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में चलने वाली काग्रेस में बल्लभ भाई पटेल राजनीतिक कर्णधार है।" विरोधियो को भी बता था कि संकल्प की दृढ़ता किसके पास है। प्रधानमंत्री बनने के बात पर जब वोट डाले गये हैं सर्वाधिक वोट सरदार पटेल को मिले किन्तु महात्मा गांधी नेहरू पंडित जवाहर लाल नेंहरू को बनाना चाहते थें इसलिए छोटी सी पर्ची देकर पटेल को इशारा किया, पर्ची पढ़ते ही पटेल ने अपना नाम वापस ले लिया। ऐसे त्याग की मूर्ति पटेल जी ही है वो हम सब के बीच में सदा उपस्थित हें आज की युवा पीढ़ी को ये जानना बहुत आवश्यक है। जिन महापुरूषों की सहयोग से उन्हें स्वतंत्रता मिली उन्हें अपने जीवन के विकास की सम्भावनाओं में ढूढना चाहिए। महर्षि व्यास ने महाभारत में लिखा है जो हमारा इतिहास है हमारे महापुरूष उन्हें यतन पूर्वक सुरक्षित रखना चाहिए जिसे आगे पीढ़ियो के सामने संप्रिशत करना चाहिए। सरदार पटेल जैसे लोगों का स्मरण करने मात्र से पूरा शरीर नवीन उर्जा से भर जाता है उनके जीवन में व्यक्तिगत और राजनीतिक सुतलन भी दुसरो के प्रेरणा का स्रोत

है। बहुत से लोगों को यह नही पता है कि भारत सुप्रीम कमांडर राष्ट्रपति होता है लेकिन 1947 से 15 दिसम्बर तक सुप्रीम कमांडर आफ इन्डियन आर्मी का चार्ज सरदार पटेल के पास ही था। उन्होने विविध रूपों में देश की सेवा की सरदार पटेल की नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, दृढ़ संकल्प की शक्ति बहुत कम लोगों में देखी जाती है कि "भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा था कि," आज का भारत तो हमारे बीच में हैं यह तभी संभव है जब सरदार पटेल जैसा व्यक्तित्व भारत की स्वतंत्रता के बाद गृहमंत्री और प्रथम उपप्रधानमंत्री के रूप में मौजूद हैं"। 565 रियासतों को एक करने की काम जो पटेल जी ने किया वह इतिहास में कभी समुद्रगुप्त ने किया था। सरदार जी ने खेड़ा सत्याग्रह किसानो का आंदोलन के माध्यम से पूरे देश के सामने आए। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है इस लड़ाई में सरदार जी ने अपने आपको पहचाना। बरदोली का आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सबसे बड़ा आन्दोलनद था। इसमें किसानो का नेतृत्व उभर कर आया। उन्होंने किसानों को यह विश्वास दिलाया कि यदि आप एक साथ चलोगे संभव है। महात्मा गांधी ने सरदार को रियासतो के बारे में था" रियासतों की समस्या इतनी जटिल है कि जिसे तुम ही हल कर सकते हो, क्योंकि बिना रक्तपात 562 रियासतो का भारत में विलय विश्व इतिहास का एक आश्चर्य ही है। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो पटेल ने वहां सेना भेजकर निजाम का आत्मसर्मपण अस्वीकार कर दिया तो पटेल ने वहां भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। सरदार पटेल के एतिहासिक कार्य में, सोमनाथ मदिर का पुर्ननिर्माण, गांधी स्मारक निधि की स्थापना, कमला नेहरू अस्पताल की रूपरेखा आादि कार्य सदैव स्मरण किये जाते रहेंगें। मरणोपरांत वर्ष 1990 में भारत का सर्वाच्च नागरिक सम्मान भारत रतन दिया गया।

भारत आज विकसित राष्ट्रो में भले ही शामिल ना हो लेकिन यह एक महान देश है, क्या हुआ यदि जनसंख्या अधिक है इसलिए या गरीबी के कारण या बहुत सारे सामाजिक राजनीतिक मुददे, लेकिन यहां के लोगों के पास अच्छी सोच है। यह अलग बात है कि हवा पानी खराब हो रहा है लेकिन चांद पर पानी सबसे पहले भारत के चन्द्रयान–1 सैटेलाइट ने ही डिटेक्ट किया। यहा इसरो के माध्यम से 104 सैटेलाइट एक बार मे लांच की गई। यहां खेल को खेल नही जुनून से खेलते हैं। खेलों के विश्व रिकार्ड भी है, खेलो के क्षेत्र के भगवान भी यही है। कबडडी, सूनूकर, सांप सांढ़ी, शतरंज, लेडो जैसे खेलो का जन्म भी भारत में हुआ। भारत को यदि पर्व और त्योंहारो का देश कहा जाए जो गलत नहीं होगा, क्योकि जितने पर्व उत्सव मनाए जाते है। शायद ही किसी देश में मनाए जाते हो उत्सव में एकता दिखाते यह पर्व देश की महानता को ही उजागर करते हैं भारत में भाषा के मामले में भी बहुत समृद्ध है 22 भाषाओं के साथ 1600 बोलियों के साथ अग्रेंजी बोलने वाला देश भारत है। दालों, मसालो को सबसे बड़ा उत्पादक देश, विश्व की पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला 700 ईसा पूर्व पर भारत में था जिसमें 10500 से भी ज्यादा 60 से भी ज्यादा विशय पढ़ते थे। आयुर्वेद विश्व प्राचीनतम ज्ञान है। भाष्कराचार्य ने सबसे पहले यह गणना की थी कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कने में कितना समय लगाती है सुशरूत को सरजरी का पिता कहा जाता है जिन्होंने लगभग 2600 साल पहले अपनी टीम केसाथ प्लास्टिक सरजरी और मतिष्क का आपरेशन तक किया था। शंकुतला देवी ने हयूमन कम्प्यूटर की उपाधि प्राप्त की। 17 वी शताब्दी तक भारत अमीर देशों की गिनती में आता

था। 1896 में डायमंड का एकमात्र स्रोत भी भारत था। यहां सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन नहीं है। बल्कि जीवन शैली है। यहां सबसे ज्याद फिल्में बनती है विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र, तीसरा सबसे बड़ा सैन्य बल भारत के पास है। मिसाइल मैन डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम की याद में 26 मई को स्विटजरलेंड में साइसं डे मनाया जाता है। (जीरो से यूएसबी अजय भटट) यहां आहार तो कमी हो सकती है लेकिन संस्कार में नहीं। यहां देश को देश नहीं, मां माना जाता है। ऐसा अखंड भारत लौह पुरूष पटेल के सपने को साकार करता हुआ दिखाई दे रहा है। बेहतर की कोशिश करते रहे याद रखें प्रयास के बिना कोई परिणाम नहीं मिलता।

सरदार पटेल के व्यक्तित्व में दुसरो से अलग विशेषतायें ही उन्हें महान बनाती है। उनका मातृभूमि के लिये प्रेम, सादगी, ईमानदारी सत्यनिष्ठा, समस्याओ को हल करने का व्यवहारिक दृष्टिकोण, सांसारिक ज्ञान, अनुशासक, और आयोजन कौशल अदभ्रत था, उपराष्ट्रपति श्री एम. वैकेया नायडू ने सरदार पटेल की जयन्ती 31 अक्टूबर 2020 को कहा कि सरदार पटेल वह नेता हैं जिनकी उन्होंने सबसे अधिक प्रशसा की। उन्होंने युवा पीढ़ी सें आग्रह करते हुये कहा था कि सावधानी पूर्वक योजना, बातचीत, परामर्श और चतुराई से निपटने के माध्यम से, आधुनिक इतिहास मे सबसे बड़ी उपलब्धिया में से एक में सभी रियासतों का साथ लाया। "मैं हर बच्चों का सरदार बल्लभ भाई पटेल के जीवन और योगदान से परिचित कराने की अपनी उत्कृष्ट इच्छा को बताना चाहता हूँ। इसी तरह प्रत्येक सिविल सेवक को उनके भाशणों को पढ़ना चाहिये और प्रत्येक राजनेता को महान गुणों को आत्मसात करना चाहिये।''

**सन्दर्भ**

1. मित्तल, डा. ए.के. विभाजन की भूमिका. विभाजन एवं स्वतंत्रता. पृष्ठ **483.**
2. वर्मा, डॉ. बी.पी. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन. पृष्ठ **744.**
3. डॉ. चतुर्वेदी. आधुनिक भारत का इतिहास.
4. अवस्थी, डॉ. ए. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन.
5. गूगल रिलीज आई.डी. 1669014–31 अक्टूबर 2022.